thearyasamaj.org

ओ३म्

वैदिक सार्वदेशिक

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली का साप्ताहिक मुख-पत्र

शुल्क :- एक प्रति 5 रुपया (भारत में) वार्षिक 250 रुपये तथा आजीवन 2500 रुपये

वर्ष 9 अंक 25 | 03 से 09 जुलाई 2014 | दयानन्दाब्द 191 | सृष्टि सम्वत् 1960853115 | सम्वत् 2071 आ. शु. 06

स्वामी आर्यवेश जी सार्वदेशिक सभा के सर्वसम्मति से प्रधान नियुक्त

अन्तरंग सभा में लिये गये कई महत्त्वपूर्ण निर्णय

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, ''दयानन्द भवन'' 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 की अन्तरंग सभा की आवश्यक बैठक दिनांक 2 जुलाई, 2014 को प्रात: 11.00 बजे से सभा कार्यालय के सभागार में सार्वदेशिक सभा के यशस्वी प्रधान स्वामी अग्निवेश जी की अध्यक्षता में प्रारम्भ हुई। इस बैठक में कई महत्त्वपूर्ण निर्णय लिये गये।

सर्वप्रथम ईश प्रार्थना के उपरान्त दिवंगत जनों को श्रद्धांजलि अर्पित की गई। सभा प्रधान स्वामी अग्निवेश जी ने दिवंगतों के निधन पर गहरा दु:ख प्रकट करते हुए कहा कि इन सब महानुभावों का निधन आर्य समाज एवं राष्ट्र की अपूर्णीय क्षति है। इस दु:ख की घड़ी में हम सब परम पिता परमात्मा से प्रार्थना

करते हैं कि दिवंगत जनों की आत्माओं को सद्गति एवं शान्ति प्रदान करें। इसके पश्चात् 2 मिनट का मौन रखकर दिवंगत जनों के प्रति श्रद्धांजलि अर्पित की गई।

इस अवसर पर अपने उद्बोधन में स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि आज समाज के सामने समस्यायें बहुत हैं और हम सबको मिल बैठकर विचार करना है और आर्य समाज को आगे बढ़ाना है। गम्भीर चर्चा के दौरान कई गणमान्य सदस्यों ने कई प्रस्ताव रखे जिन पर विचार-विमर्श किया गया। स्वामी जी ने कहा कि मुझे तीन वर्ष के लिए प्रधान चुना गया था लेकिन सभा पर चल रहे मुकदमे आदि के कारण आज 10 वर्ष हो गये हैं। मेरी हार्दिक इच्छा है कि युवाओं को नेतृत्व दिया जाये और वे आर्य समाज को आगे बढ़ायें। मेरा पूर्ण सहयोग नये नेतृत्व को रहेगा। मैं सभा के प्रधान पद से त्याग पत्र दे रहा हूँ। स्वामी जी ने कहा कि मैं सदन की भावनाओं को देखते हुए स्वामी आर्यवेश जी को प्रधान पद सौंप रहा हूँ। उन्होंने कहा कि मैंने स्वामी इन्द्रवेश जी के साथ वर्षों तक कार्य किया है और स्वामी आर्यवेश जी स्वामी इन्द्रवेश जी की प्रतिमूर्ति हैं ऐसा मैंने अनुभव किया है और वे अत्यन्त निष्ठा पूर्वक आर्य समाज के कार्यों को आगे बढ़ायेंगे ऐसा मेरा विश्वास है। स्वामी जी के इस त्यागपूर्ण निर्णय का सदन ने करतल ध्वनि से स्वागत किया। स्वामी आर्यवेश जी को सर्व सम्मति से सार्वदेशिक सभा का प्रधान नियुक्त किया गया।

इस अवसर पर अत्यन्त भावुक हृदय और रुंधे गले से बोलते हुए स्वामी आर्यवेश जी ने कहा कि मुझे प्रधान बनाने के लिए स्वामी अग्निवेश जी को अपना पद छोड़ना पड़ रहा है यह मुझे अच्छा नहीं लग रहा है मैंने स्वामी जी के निर्देशन तथा सहयोग से आर्य समाज की सेवा की है उनके प्रधान रहते हुए भी मैं पूर्ण निष्ठा तथा परिश्रम से आर्य समाज का कार्य देखता रहता लेकिन आप सब लोगों ने जो विश्वास मेरे में व्यक्त किया है उसके लिए मैं आप सबको यह कहना चाहता हूं कि सभा का कार्य स्वामी अग्निवेश जी के मार्ग दर्शन में ही पूर्ववत चलेगा और उनका पूर्ण सहयोग हम सबको प्राप्त होता रहेगा ऐसा मेरा विश्वास है उन्होंने कहा आर्य समाज को गति देने के साथ-साथ स्वामी जी द्वारा निर्देशित सप्तक्रांति के समस्त कार्यक्रमों के साथ-साथ अत्यन्त आक्रामक होकर कार्य करने की आवश्यकता है उन्होंने कहा कि संसार का उपकार करना हमारा मूल मंत्र है और उसके अनुरूप ही कार्य करना होगा। किसानों, भूमिहीनों तथा दलितों की आवाज को बुलन्द करने के साथ-साथ हिंसा तथा नशामुक्त समाज को बनाने पर बल दिया जायेगा। स्वामी जी ने कहा कि बहुत शीघ्र सभा का साधारण अधिवेशन का आयोजन किया जायेगा और वहाँ पर आप सबके सहयोग से आगे का प्रारूप तय किया जायेगा।

स्वामी जी के प्रधान पद पर नियुक्त होने पर सर्वप्रथम स्वामी अग्निवेश जी ने माला पहनाकर स्वामी जी का उत्साहवर्धन किया तथा बधाई दी। इस अवसर पर सर्वश्री बैद्य इन्द्रदेव जी, स्वामी श्रद्धानन्द, रमेश आर्य, आचार्य भद्रकाम वर्णी, कै. गुलाटी, आचार्य सन्तराम आर्य, स्वामी सोम्यानन्द, स्वामी शान्तिवेश, जगदीश सूर्यवंशी, पं. माया प्रकाश त्यागी,, अभय देव शास्त्री, ओम प्रकाश मान, प्रेमपाल शास्त्री जी, सत्यव्रत सामवेदी जी, आर. एस. तोमर जी, मधुर प्रकाश जी, महेन्द्र शास्त्री जी, बिरजानन्द जी, भूपनारायण शास्त्री जी, डॉ. अनिल आर्य, स्वामी श्रद्धानन्द, डॉ. जयप्रकाश भारती सहित अनेको गणमान्य व्यक्तियों ने पुष्पहार पहनाकर स्वामी जी को बधाई दी।

thearyasamaj.org

लोहिया की मदद से पूंजीवाद की समझ और समाजवाद की तलाश

- सुनील

पूंजीवाद एक बार फिर संकट में है। पिछले दिनों आई जबरदस्त मंदी ने इसकी चूलें हिला दी हैं और दुनिया अभी इससे पूरी तरह उबरी नहीं है। पूंजीवाद का संकट सिर्फ बैंकों, कंपनियों व शेयर बाजार तक सीमित नहीं है। दुनिया में भूखे, कुपोषित, बेघर और बेरोजगार लोगों की संख्या तेजी से बढ़ रही है। आज दुनिया में एक अरब से ज्यादा लोग भूखे रहते हैं, यानी हर छठा आदमी भरपेट नहीं खा पाता है। इंसान की सबसे बुनियादी जरूरत भोजन को भी पूरा नहीं कर पाना पूंजीवादी सभ्यता की सबसे बड़ी विफलता है। पर्यावरण का संकट भी गहराता जा रहा है, जिसे कोपनहेगन सम्मेलन की विफलता ने और उजागर कर दिया है।

इन संकटों ने पूंजीवाद सभ्यता के चमत्कारिक दावों पर एक बार फिर बड़ा सवाल खड़ा कर दिया है। इसके विकल्पों की तलाश तेज हो गई है। लेकिन इसके लिए जरूरी है कि पहले इसकी बुनियादी गड़बड़ियों को समझा जाए ताकि उनका सम्यक रूप से विश्लेषण किया जा सके।

कार्ल मार्क्स पूंजीवाद के सबसे बड़े और सशक्त व्याख्याकार व टीकाकार रहे हैं। किन्तु डेढ़ सौ सालों बाद उनके विश्लेषण और सिद्धान्तों में कई कमियाँ दिखाई देती हैं। पूंजीवाद के विकास, विनाश और क्रांति के बारे में उनकी भविष्यवाणी सही साबित नहीं हुई है। पूरी दुनिया पूंजीपतियों और मजदूरों में नहीं बंटी। कारखानों का संगठित मजदूर वर्ग क्रान्ति का अगुआ अब नहीं रहा। रूस, पूर्वी यूरोप, चीन, वियतनाम आदि में जो कम्युनिस्ट क्रांतियाँ हुईं, वे धराशायी हो गई हैं, और ये देश वापस पूंजीवाद के आगोश में चले गये हैं। इधर लातीनी अमरीका में जो मार्क्सवाद धारा से काफी अलग है। दुनिया में आन्दोलन और संघर्ष तो बहुत हो रहे हैं, किन्तु मजदूर मालिक संघर्ष अब खबरों में नहीं है। किसानों, आदिवासियों और असंगठित मजदूरों के आंदोलन, जल-जंगल के आंदोलन, धार्मिक समुदायिक राष्ट्रीय पहचान आधारित तो हैं, किन्तु वे मार्क्स के विचारों से काफी अलग हैं। तब हम इन्हें कैसे समझें?

कार्ल मार्क्स पूंजीवाद के सबसे बड़े और सशक्त व्याख्याकार व टीकाकार रहे हैं। किन्तु डेढ़ सौ सालों बाद उनके विश्लेषण और सिद्धान्तों में कई कमियाँ दिखाई देती हैं। पूंजीवाद के विकास, विनाश और क्रांति के बारे में उनकी भविष्यवाणी सही साबित नहीं हुई है। पूरी दुनिया पूंजीपतियों और मजदूरों में नहीं बंटी। कारखानों का संगठित मजदूर वर्ग क्रान्ति का अगुआ अब नहीं रहा। रूस, पूर्वी यूरोप, चीन, वियतनाम आदि में जो कम्युनिस्ट क्रांतियाँ हुईं, वे धराशायी हो गई हैं, और ये देश वापस पूंजीवाद के आगोश में चले गये हैं। इधर लातीनी अमरीका में जो मार्क्सवाद धारा से काफी अलग है। दुनिया में आन्दोलन और संघर्ष तो बहुत हो रहे हैं, किन्तु मजदूर मालिक संघर्ष अब खबरों में नहीं है। किसानों, आदिवासियों और असंगठित मजदूरों के आंदोलन, जल-जंगल के आंदोलन, धार्मिक समुदायिक राष्ट्रीय पहचान आधारित तो हैं, किन्तु वे मार्क्स के विचारों से काफी अलग हैं।

इस मामले में डॉ. राममनोहर लोहिया से हमें मदद मिल सकती है। उन्होंने 1943 में 'अर्थशास्त्र मार्क्स के

आगे' नामक निबन्ध लिखा। उन्होंने बताया कि पूंजीवादी शोषण का मुख्य आधार एक कारखाने या एक देश के अन्दर मालिक द्वारा मजदूर का शोषण नहीं, बल्कि उपनिवेशों का शोषण है। उपनिवेशों के किसान, कारीगर व मजदूर ही असली सर्वहारा हैं। लेनिन का यह कथन गलत है कि साम्राज्यवाद पूंजीवाद की पहली और अनिवार्य अवस्था है। यदि पश्चिम यूरोप के देशों ने अमरीका, अफ्रीका, एशिया और आस्ट्रेलिया के विशाल भूभागों पर कब्जा करने और लूटने का काम न किया होता, तो वहाँ औद्योगिक क्रांति नहीं हो सकती थी।

उपनिवेशों के आजाद होने के बाद भी नव-औपनिवेशिक और नव-साम्राज्यवादी तरीकों से यह लूट व शोषण चालू है और इसीलिए पूंजीवाद फल-फूल रहा है। यह शोषण सिर्फ औपनिवेशिक श्रम का ही नहीं है इसमें पूरी दुनिया के प्राकृतिक संसाधनों का बढ़ता हुए दोहन, लूट भी अनिवार्य रूप से छिपा है। इसीलिए आज दुनिया में सबसे ज्यादा झगड़े, प्राकृतिक संसाधनों को लेकर हो रहे हैं। इसीलिए पर्यावरण के संकट भी पैदा हो रहे हैं।

औपनिवेशिक शोषण की जरूरत पूंजीवादी विकास के लिए इतनी जरूरी है कि तीसरी दुनिया के जिन देशों ने इस तरह का विकास करने की कोशिश की, बाहरी उपनिवेश न होने पर उन्होंने आंतरिक उपनिवेश सिर्फ क्षेत्रीय व भौगोलिक ही नहीं होते हैं। अर्थव्यवस्था के कुछ हिस्से भी (जैसे गाँव या खेती) आंतरिक उपनिवेश बन जाते हैं। भारतीय खेती के महत्त्वपूर्ण संकट और किसानों की आत्महत्याओं के पीछे आंतरिक उपनिवेश की व्यवस्था ही है।

सोवियत संघ का सबसे बड़ा अन्तर्विरोध यही था कि उसने उसी तरह का औद्योगिकरण और विकास करने की कोशिश की, जैसा पूंजीवादी यूरोप अमेरिका में हुआ था। किन्तु बाहरी और आंतरिक उपनिवेशों की वैसी सुविधा उसके पास नहीं थी। इसलिए पूंजीवाद का एक बुनियादी नियम हम इस तरह बयान कर सकते हैं पूंजीवादी विकास के लिए औपनिवेशिक, नव-औपनिवेशिक या आंतरिक औपनिवेशिक शोषण जरूरी है। यह शोषण दोनों का होता है - श्रम का भी और प्राकृतिक संसाधनों का भी।

दुनिया के स्तर पर इस नियम का अभी तक कोई महत्त्वपूर्ण अपवाद नहीं है।

लोहिया के पहले गांधी के आधुनिक पूंजीवादी सभ्यता के इस शोषणकारी विनाशकारी चरित्र के बारे में चेतावनी दी थी। मार्क्स के अनुयायियों में रोजा लक्जवर्ग ने इस विषय में मार्क्स की खामियों को उजागर किया था और उसे सुधारने की कोशिश की। लोहिया के बाद लातीनी अमरीका के आन्द्रे गुन्दर फेंक और मिस्र के समीर अमीन नामक मार्क्सवादी अर्थशास्त्रियों ने लोहिया से मिलती-जुलती बातें कहीं हैं।

यदि ऊपर कही गई बातें सही हैं, तो इनसे कई निष्कर्ष निकलते हैं -

तीसरी दुनिया के गरीब देशों में यूरोप अमरीका जैसा औद्योगीकरण एवं विकास संभव नहीं है, चाहे वह पूंजीवादी तरीके से किया जाए या साम्यवादी (राज्य पूंजीवादी) तरीके से।

चूंकि अमरीका यूरोप की समृद्धि व जीवन शैली पूरी दुनिया के श्रम व प्राकृतिक संसाधनों की लूट पर टिकी है, वह दुनिया के सारे लोगों के लिए हासिल करना संभव नहीं है। इसलिए समाजवादियों को उसका सपना छोड़ देना होगा। सबकी न्यूनतम बुनियादी जरूरतें तो पूरी हो सकती हैं, किन्तु विलासितापूर्ण जीवन सबका नहीं हो सकता है। दूसरे शब्दों में स्वतंत्रता, समता, बंधुत्व के साथ 'सादगी' और 'स्वावलम्बन' भी समाजवादी समाज के निर्माण के महत्त्वपूर्ण एवं जरूरी है सूत्र होंगे।

इस अर्थ में दुनिया का आर्थिक, राजनैतिक संकट और पर्यावरणीय संकट आपस में जुड़े हैं। एक वैकल्पिक समाजवादी व्यवस्था में ही दोनों संकटों से मुक्ति मिल सकेगी। दूसरे शब्दों में, समाजवाद निर्माण के किसी भी प्रयास में दोनों तरह के आंदोलनों आर्थिक, सामाजिक बराबरी के आंदोलन एवं पर्यावरण के आंदोलन को मिलकर ताकत (प्रयत्न करना) लगाना होगा।

विकल्प सिर्फ पूंजीवाद (उत्पादन सम्बन्धों के संकुचित अर्थ में) का नहीं हो सकता। निजी सम्पत्ति को खत्म करना काफी नहीं है। पूंजीवादी उत्पादन सम्बन्धों के साथ पूंजीवादी तकनालॉजी, जीवनशैली और जीवन मूल्यों का भी विकल्प खोजना होगा। एक नई सभ्यता का निर्माण करना होगा।

इक्कीसवीं सदी में समाजवाद की किसी भी संकल्पना, तलाश और कोशिश में ये महत्त्वपूर्ण सूत्र होंगे। इनके लिए हम लोहिया के आभारी हैं।

- विवेक शक्ति से साभार

thearyasamaj.org

जीने का हक मांगने का हश्र अत्याचार

– मुक्ता मनोहर, महासचिव, कामगार यूनियन, महानगरपालिका, पुणे

आज का दौर बराबरी का दौर कहा जाता है लेकिन हकीकतन कोई बराबरी नहीं आ पाई है। वैश्वीकरण तथा निजीकरण के साथ–साथ उपभोक्तावाद और स्वार्थी यौन कुंठा बढ़ने पर है। दलित महिला, यहां तक कि हजारों पुरु ष भी, किसी संपत्ति का स्वामी होने की सोच भी नहीं सकते। समृद्धि व तमाम बुनियादी हकों के बारे में भी सोच नहीं सकते। फिर रास्ता क्या है?

इस लोकतांत्रिक देश में/संतों और धर्मपरायण लोगों के देश में भूमिहीनों, मजदूरों, दलितों और महिलाओं का सम्मान नहीं बचा है/या उन्हें जन्म लेने तक का अधिकार नहीं।

प्रश्न उठता है कि क्यों है ऐसा?और यह भी कि सवाल हमारे बरक्स बराबर बना रहता है कि इस सूरत को बदला कैसे जाए? सोलह जून को नीले झंडे एक साथ थे। भारतीय कम्युस्टि पार्टी (सीपीआई), लाल निशान पार्टी (एल) तथा भारिपा बहुजन महासंघ समेत कुछ प्रगतिशील संगठनों ने एक सम्मेलन आयोजित किया था। एडवोकेट प्रकाश जी अंबेडकर तथा कॉमरेड पनसारे सरीखे नेता अन्य नेताओं के साथ मंच पर विराजमान थे। पीड़ित जन अपनी पीड़ा साझा कर रहे थे। ज्वलंत अनुभवों को सुनकर हर कोई सन्न था। महसूस कर रहा था पीड़ितों की पीड़ा को। शर्मिंदा था इस बात के लिए कि ये घटनाएं महाराष्ट्र में हो रही हैं, जो प्रगतिशील सोच की भाव–भूमि है। यह महात्मा ज्योतिबा फुले और डॉ. बीआर अंबेडकर की भूमि है। बेशक, कटु सत्य है कि दलितों और महिलाओं का उत्पीड़न हर कहीं हो रहा है। चाहे वह कोई भी राज्य हो, क्षेत्र हो या वहां की भाषा कुछ भी हो। हर कहीं दलितों और महिलाओं की समस्याएं एक–सी हैं।

सेना के एक जवान भोंसले बता रहे थे कि किस तरह ऊंची जात वालों ने उनकी मां का उत्पीड़न किया और उनकी हत्या कर दी। घटना की समुचित जांच करवाए जाने की उनकी फरियाद अभी तक अनसुनी है। भोंसले महाराष्ट्र के नांदेड़ जिले से आते हैं। उन्होंने सम्मेलन में मौजूद लोगों से सवाल किया, 'उनका कर्त्तव्य क्या है?भारत की सरहदों पर मुस्तैद रहें या अपनी मां और परिवार की सुरक्षा में जुट जाएं?यह हत्या दलित महिलाओं के हालात को बयां करती है। बंसोड की मां अपने अधिकारों को लेकर मुखर रहती थीं। कुछ समय बाद महाराष्ट्र जिले के नागपुर जिले में उनकी हत्या कर दी गई। नागपुर जिले के गांव खैरालंजी में रेड तथा भुतमांगे परिवार को इसी प्रकार की मुखरता की कीमत चुकानी पड़ी। मां, उसकी युवा पुत्रियों (सुरेखा और प्रियंका) तथा दो पुत्रों की गांव में ऊंची जात वालों ने बर्बरता से हत्या कर दी। यह घटना जमीन हड़पने के मामले से जुड़ी थी। जमीन पर कब्जा करने की गांव वालों की कोशिशों की सुरेखा ने पुलिस में शिकायत दर्ज कराई थी।

खरदा जिले में एक दलित किसान परिवार के 17 वर्षीय किशोर को तीन लोगों ने बर्बरता से पीटा और फिर गला घोंट कर हत्या कर दी। उसका दोष था कि वह आरोपितों में से एक की बहन से बात कर रहा था। नितिन राजू आगे का शव बाद में पेड़ से लटका बरामद किया गया। नितिन के पिता ने सम्मेलन में मौजूद लोगों से पूछा कि क्या उनका पुत्र अब लौट पाएगा? उसे न्याय कैसे मिल पाएगा?

नस्लीय अहंकार

इस प्रकार, बलात्कार कर हत्या करके शव को लटका दिए जाने की ये घटनाएं क्या दर्शाती हैं?ऐसी हर घटना के पीछे नस्लीय श्रेष्ठता का भाव रहता है। ये ऊंची जात वाला होने का अहंकार है। ये ऊंची जात वालों में जातिवादी व्यवस्था को कायम रखने की कहीं गहरे पैठी भावना है। और दलित समुदायों को आतंकित करने का भाव तो रहता ही है। ज्यादातर दलित महिलाओं का एक ही प्रमुख कारण के चलते बलात्कार होता है। कारण है कि दलित समाज पर जाहिर किया जाए कि अपने अधिकारों की बात करोगे, जीने के अधिकार की बात करोगे, पेयजल पर अधिकार की बात करोगे, शिक्षा पाने के हक की कहोगे, सांस लेने की बात करोगे तो यही हश्र होगा। और वह भी तुरत–फुरत। ज्यादातर मामलों में पीड़ितों के सगे–संबंधियों को पुलिस के असहयोग जैसे कडुवे अनुभव से गुजरना पड़ता है। दलितों पर हिंसा सामाजिक तौर पर मान्यता पा चुकी है। और दलित समुदायों से ताल्लुक रखने वाले मजदूर जब अपनी मांगों को पूरा कराने के लिए संघर्ष करते हैं, तो उन्हें क्या कीमत चुकानी पड़ती है?

हिम्मत तोड़ने के लिए दलितों से रेप

दलित जब सरकार की फालतू भूमि या शामलात जमीन पर हक दिए जाने की बात करते हैं, न्यूनतम मजदूरी पर अपना हक जताते हैं, तो सामूहिक जनसंहार जैसी घटनाएं घटित होती हैं। इसी दौरान दलित महिलाओं के साथ बलात्कार की ज्यादातर घटनाएं प्रकाश में आती हैं। ऊंची जात वाले समुदायों में यह धारणा हमेशा बलवती रहती है कि महिला पुरु ष की जागीर है। इसलिए दलितों की हिम्मत तोड़ने और उन्हें हतोत्साहित करने के लिए दलित महिलाओं के साथ बलात्कार किए जाते हैं।

दूसरी तरफ, हमें डॉ. भीमराव अंबेडकर के विचार पढ़ने को मिलते हैं। उन्होंने 1942 में दलित महिला फेडरेशन की सभा में कहा था, 'मेरी पक्की धारणा है कि जब महिलाओं में चेतना आएगी तो अछूत समुदाय प्रगति करेगा। मेरा मानना है कि महिलाओं को संगठित हो जाना चाहिए और सामाजिक बुराइयों के खात्मे में प्रमुख भूमिका निभानी चाहिए। दलित समुदाय की प्रगति को इस समाज की महिलाओं की उन्नति से आंका जाना चाहिए। प्रत्येक महिला को अपने पति के साथ कंधे से कंधे मिलाकर चलना चाहिए न कि उसकी दासी की तरह। अपने पति की मित्र और हर कदम साथ..।)

पितृसत्तात्मक समाज में आम धारणा है, जो गहरे पैठी है, कि महिला जागीर होती है। इसलिए एकजुट होते किसी समुदाय को हतोत्साहित करने और उसकी एकता को तोड़ने के लिए महिलाओं को निशाना बनाया जाता है। वे ही हैं, जो भावी संतति को जन्म देती हैं। फसाद की जड़ उन्हें ही मान लिया जाता है। सामूहिक हत्याकांड में भी यही सोच काम करती है।

सशक्तीकरण नहीं हुआ पंचायती राज से भी

महिलाओं पर ज्यादतियों में रेप एक पहलू भर है लेकिन आम जुबान में कहें तो पानी के लिए कौन मर रहा है?बेरोजगार कौन है?कौन शिक्षा, तकनीकी ज्ञान हासिल करने से वंचित है?कौन देवदासी व्यवस्था का शिकार है और किसे यौन–कर्म में धकेल दिया जाता है?हर कहीं हम देखते हैं कि निचले तबकों की महिलाओं को ये समस्याएं झेलनी पड़ती हैं। ऐसी दलित महिला घृणा की पात्र समझी जाएगी तो आगे बढ़कर अपने साथ होने वाले अन्याय के खिलाफ आवाज उठाएगी। जैसा कि भुतमांगे मामले में हुआ। युवा लड़की प्रियंका पढ़ाई–लिखाई में अच्छी थी। उसने दस जमा दो की अपनी परीक्षा में अच्छे अंक अर्जित किए थे। वह एनसीसी में थी, अपने गांव यूनिफॉर्म धारण करके पहुंचती थी, तो लोग उसकी आत्मविश्वास से भरे उसके हाव–भाव देख हतप्रभ रह जाते थे।

दलित महिलाओं का पंचायती राज से क्या सशक्तीकरण हुआ?नगर में हुए इस सम्मेलन में एक पूर्व सरपंच के भाई मनोज कसाब ने बताया कि उनके भाई ने सरपंच के रूप में दलितों की बस्तियों की सुध लेने के प्रयास किए तो उनका बर्बरता से कत्ल कर दिया गया। और महिलाओं के कैसे हालात हैं?दलित जातियों और महिलाओं को भी पंचायत राज के तहत आरक्षण दिया गया है। लेकिन कई बार देखा गया है कि ऊंची जात वाले उन्हें पंचायत के मुखिया के तौर पर बर्दाश्त नहीं कर पाते। उनका अपमान करते हैं। उनकी हत्या तक कर देते हैं। कुछ साल पहले की बात है, जब नगर तालुका पंचायत समिति की मुखिया सुश्री शेंडगे भाजपा–सेना कार्यकर्ताओं की हिट लिस्ट में थीं। एक बार एक सांस्कृतिक कार्यक्रम के दौरान उन्होंने मुझसे एक घटना साझा की थी। बताया कि उन्हें जबरन आसन से उठाया गया, कपड़े फाड़ डाले गए और बेहद बेदर्दी से मारा–पीटा गया। कई मामलों में अगर दलित महिला सरपंच है, तो उसके आसन और मेज आदि को ठोकर मार दी जाती है। आज का दौर बराबरी का दौर कहा जाता है लेकिन हकीकतन कोई बराबरी नहीं आ पाई है। वैश्वीकरण तथा निजीकरण के साथ–साथ उपभोक्तावाद और स्वार्थी यौन कुंठा बढ़ने पर हैं। दलित महिला, यहां तक हजारों पुरु ष भी, किसी संपत्ति का स्वामी होने की सोच भी नहीं सकते। समृद्धि और तमाम बुनियादी अधिकारों के बारे में भी नहीं सोच सकते। फिर रास्ता क्या बचा?सिवाय इसके कि एकजुट होकर इन हालात को बदला जाए।

(सामाजिक कार्यकर्ता मुक्ता कई किताबों की लेखिका भी हैं। इनमें 'बलात्कार की वास्तविकता' चर्चित और कई भाषाओं में अनूदित हैं।)

– राष्ट्रीय सहारा से साभार

"हार नहीं होती"

लहरों से डरकर नौका पार नहीं होती,
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।
नन्ही चीटीं जब दाना लेकर चलती है।
चढ़ती दीवारों पर सौ बार फिसलती है।।
मन का विश्वास, रगों में साहस भरता है।
चढ़कर गिरना, गिरकर चढ़ना न अखरता है।।
आखिर उसकी मेहनत बेकार नहीं होती।
डुबकियाँ सिंधु में गोताखोर लगाता है।।
जा–जाकर खाली हाथ लौट आता है।
मिलते न सहज ही मोती, गहरे पानी में।।
बढ़ता दूना, उत्साह, इसी हैरानी में।
मुट्ठी उसकी खाली, हर बार नहीं होती।।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।
असफलता एक चुनौती है, स्वीकार करो।
क्या कमी रह गई देखो और सुधार करो।।
जब तक सफल न हो, नींद चैन की त्यागो तुम।
संघर्षों का मैदान छोड़ मत भागो तुम।।
कुछ किए बिना ही जय–जयकार नहीं होती।
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती।।

-डॉ. लक्ष्मणदास आर्य, मध्य प्रदेश

thearyasamaj.org

सार्वदेशिक सभा के सभागार में यशस्वी आर्य संन्यासी तथा नव-निर्वाचित सांसद

स्वामी सुमेधानन्द जी का भव्य स्वागत तथा अभिनन्दन

आर्य समाज को संगठित करने की महती आवश्यकता

- स्वामी सुमेधानन्द

सार्वदेशिक सभा के खचाखच भरे सभागार में राजस्थान के सीकर से निर्वाचित सांसद तथा यशस्वी आर्य संन्यासी स्वामी सुमेधानन्द जी का 2 जुलाई, 2014 को उत्साहपूर्ण वातावरण में अभिनन्दन किया गया। आर्य समाज के गणमान्य व्यक्तियों ने स्वामी जी को शॉल उढ़ाकर तथा माला पहनाकर भावभीना स्वागत किया। कार्यक्रम की अध्यक्षता क्रान्तिकारी आर्य संन्यासी स्वामी अग्निवेश जी ने की।

इस अवसर पर बोलते हुए स्वामी अग्निवेश जी ने कहा कि यह आर्य समाज के लिए अत्यन्त गौरव की बात है कि आर्य समाज के लिए सर्वात्मना समर्पित स्वामी सुमेधानन्द जी संसद में भारी बहुमत से विजयी होकर पहुंचे हैं। आर्य समाज और राष्ट्र को स्वामी जी से बहुत आशायें हैं। स्वामी जी ने कहा कि सुमेधानन्द जी सार्वदेशिक सभा के कार्यकारी प्रधान भी रहे हैं तथा इन्होंने स्वामी इन्द्रवेश जी तथा स्वामी ओमानन्द जी सरस्वती के साथ हरियाणा में आर्य समाज के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लिया है। उन्होंने कहा कि बम्बई के पूर्व कमिश्नर श्री सत्यपाल सिंह जी जो बागपत से जीतकर संसद में पहुंचे हैं वे सार्वदेशिक सभा के अन्तरंग सदस्य भी हैं उनको भी आमंत्रित किया था लेकिन उनका मुम्बई में पूर्व निर्धारित कार्यक्रम था अत: वे आज नहीं आ सके। स्वामी जी ने कहा कि ये आर्य समाज के योद्धा संसद में आर्य समाज की आवाज बुलन्द करेंगे। राष्ट्र को विघटन से बचाने, धर्म की स्थापना और अधर्म के विनाश के लिए महर्षि दयानन्द की विचारधारा तथा आन्दोलन को आगे बढ़ाने की आवश्यकता है। बढ़ती अराजकता, अधार्मिकता, विद्वेष, वैर-भाव, जाति-भेद, वर्ग-भेद, सम्प्रदाय भेद को जड़ मूल से मिटाने तथा देश को सर्वांगीण समुन्नत बनाने के लक्ष्य को पूर्ण करने के लिए आर्य समाज के ये दो योद्धा स्वामी सुमेधानन्द जी तथा डॉ. सत्यपाल जी संसद में आवाज उठायेंगे। मैं इनका अभिनन्दन करता हूँ तथा बधाई देता हूँ कि आर्य समाज का एक वरिष्ठ कार्यकर्ता संसद में पहुँचा है।

इस अवसर पर सभा प्रधान स्वामी आर्यवेश जी ने शॉल उढ़ाकर तथा माला पहनाकर स्वामी सुमेधानन्द जी का अभिनन्दन किया। उन्होंने इस अवसर पर अपने उद्बोधन में कहा कि स्वामी सुमेधानन्द जी से हमारा बहुत गहरा तथा नजदीकी सम्बन्ध है, हम दोनों ने मिलकर हरियाणा में आर्य समाज का बहुत कार्य किया है उन्होंने कहा कि स्वामी जी आर्य समाज के लिए सर्वात्मना समर्पित हैं तथा उनकी एक-एक सांस में आर्य समाज की विचारधारा समाई हुई है। आजकल स्वामी जी ने अपना कार्यक्षेत्र राजस्थान को बनाया हुआ है तथा सीकर के समीप पिपराली में एक भव्य आश्रम की स्थापना की है तथा वहीं से आर्य समाज के भव्य कार्यक्रमों का संचालन किया जा रहा है। स्वामी जी अनेक वर्षों तक राजस्थान सभा के प्रधान भी रहे तथा सार्वदेशिक सभा में भी उन्होंने उपप्रधान के पद को सुशोभित किया। स्वामी जी आज संसद में पहुंच गये हैं और आर्य समाज के कार्यों में आपका सहयोग निरन्तर प्राप्त होता रहेगा ऐसा मेरा विश्वास है। स्वामी जी को हार्दिक बधाई तथा अभिनन्दन।

इस अवसर पर अपने सारगर्भित उद्बोधन में स्वामी सुमेधानन्द जी ने आर्य समाज के नौवें नियम का उल्लेख करते हुए कहा कि स्वामी दयानन्द जी ने कहा है कि प्रत्येक को अपनी ही उन्नति में सन्तुष्ट नहीं रहना चाहिए अपितु सबकी उन्नति में अपनी उन्नति समझनी चाहिए। उन्होंने कहा कि आर्य समाज की सबसे बड़ी आवश्यकता संगठन को मज़बूत करने की है उन्होंने अपने अनुभवों को साझा करते हुए कहा कि यहां इस सभा में जितने भी व्यक्ति बैठे हैं सभी आर्य समाज के कर्मठ कार्यकर्ता हैं। यदि ये सब एक-एक, दो-दो गावों को अपना कार्य क्षेत्र बना लें तो हमारे पास पर्याप्त संख्या बल हो जायेगा और जब कभी हम कोई कार्यक्रम करते हैं तो हजारों की संख्या में लोग जमा होंगे। आज स्थिति यह है कि मंच पर तो लोग अधिक होते हैं लेकिन श्रोता कम होते हैं। स्वामी जी ने कहा कि आज जातिवाद, भ्रष्टाचार, साम्प्रदायिकता, नशाखोरी, पाखण्ड, शोषण का चारों तरफ बाजार गर्म है लोग त्रस्त हैं और आर्य समाज की तरफ देख रहे हैं। आर्य समाज के कार्यकर्ताओं में संघर्ष करने की क्षमता पैदा करनी होगी तथा आर्यों की जो अलग पहचान, विशेषता तथा आकर्षण था उसको पुन: प्राप्त करना होगा। स्वामी जी ने कहा कि मैं संसद में अलग से ही दिखाई देता हूं। सारे लोग मेरी विशेष वेशभूषा से मुझे पहचानने लगे हैं उन्होंने कहा कि आकर्षण पैदा करना होगा और अपने कार्य का दायरा बढ़ाना होगा। हमारे पास वेदों का खजाना है हमारे पास ऐसी विचारधारा है जो किसी के पास नहीं है। लोग आश्चर्य चकित रह जाते हैं जब वेदों के ज्ञान के बारे में सुनते हैं लेकिन हम अपने अच्छे माल को भी जनता को नहीं दे पा रहे हैं और अन्य लोग अच्छी पैकिंग करके अपने रद्दी माल को भी खपा रहे हैं। स्वामी जी ने कहा कि इसका कारण है कि हम अत्यन्त संकुचित, संकीर्ण और सीमित होकर रह गये हैं। हम आपस में तो लड़ते-झगड़ते हैं लेकिन अपने मिशन और अपने लक्ष्य को भूल जाते हैं। स्वामी जी ने कहा कि एक ही रास्ता है और वह है आर्य समाज की विचारधारा को चारो तरफ फैलाना और इस विचाराधारा को प्रासंगिक विश्वसनीय, प्रभावशाली बनाना आप सब कर्मठ कार्यकर्ताओं के ऊपर निर्भर करता है। स्वामी जी ने कहा कि मुझे पैदा होते ही आर्य समाज के संस्कार एवं वातावरण माता-पिता से प्राप्त हुआ। आर्य समाज की सेवा के लिए मैं हर समय तत्पर हूँ। मुझे सार्वदेशिक सभा के सभागार में स्वामी अग्निवेश जी, स्वामी आर्यवेश जी तथा आप सबने आमंत्रित किया इसके लिए मैं आप सबका हृदय से धन्यवाद करता हूँ।

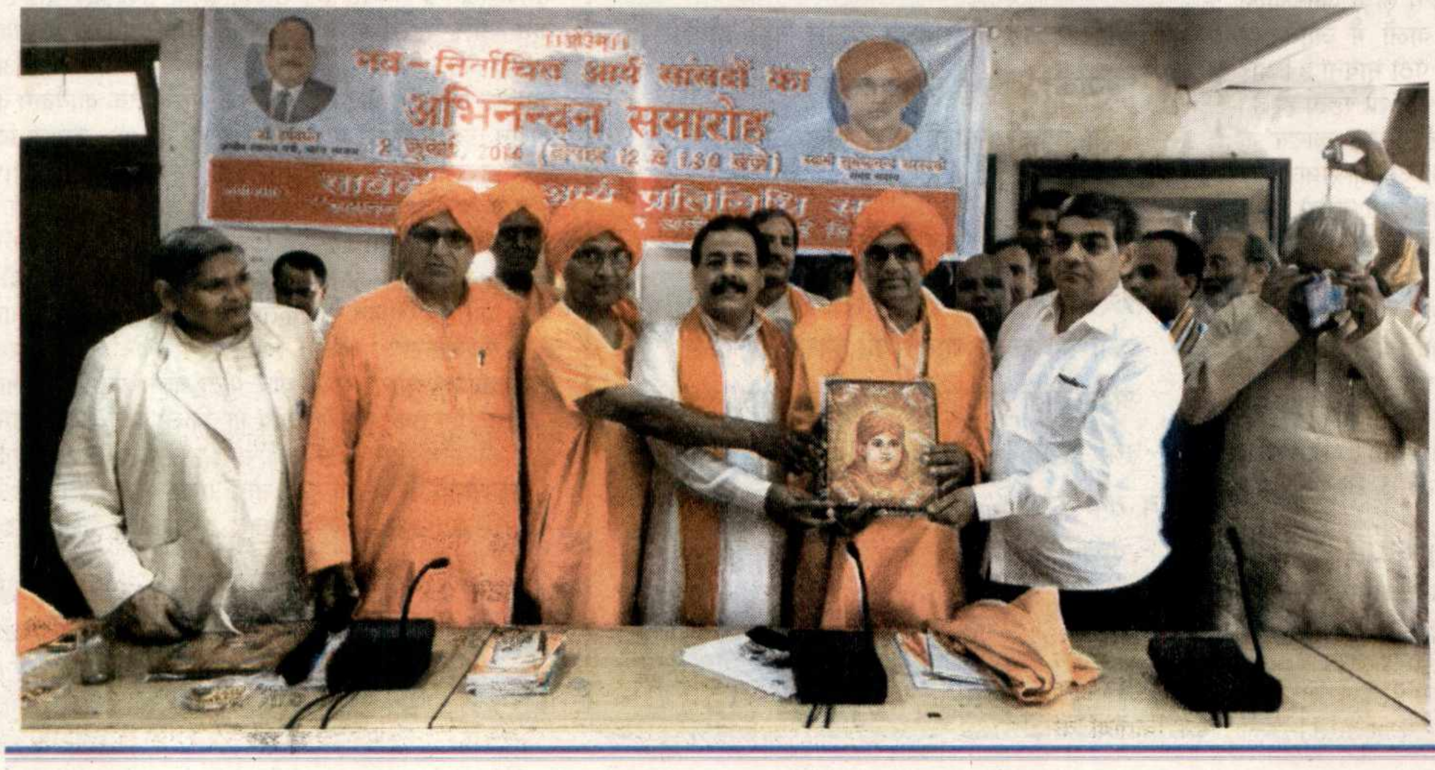

स्वामी सुमेधानन्द जी का अभिनन्दन सर्वश्री सत्यव्रत सामवेदी, डॉ. अनिल आर्य, महेन्द्र भाई, नाहर सिंह वर्मा, प्रेमपाल शास्त्री, स्वामी श्रद्धानन्द, रमेश आर्य, आचार्य भद्रकाम वर्णी, कै. गुलाटी, आचार्य सन्तराम आर्य, स्वामी सोम्यानन्द, स्वामी शान्तिवेश, जगदीश सूर्यवंशी, पं. माया प्रकाश त्यागी,, अभय देव शास्त्री, ओम प्रकाश मान, वैद्य इन्द्रदेव, आर. एस. तोमर एडवोकेट, महेन्द्र सिंह शास्त्री, डॉ. जयप्रकाश भारती, विरजानन्द, भूपनारायण शास्त्री तथा अनेको गणमान्य व्यक्तियों ने शॉल उढ़ाकर तथा माला पहनाकर स्वागत किया।

वैचारिक क्रान्ति के लिए सत्यार्थ प्रकाश पढ़ें।

thearyasamaj.org

पुलिस एवं नेताओं के संरक्षण में पश्चिमी उ. प्र. में धड़ल्ले से हो रही है गोकशी

गोकशी की बढ़ती घटनाओं से हिन्दू समाज एवं गोभक्त चिंतित

- सुरेन्द्र सिंघल

पश्चिमी उत्तर प्रदेश में पुलिस व सफेदपोश नेताओं के संरक्षण में बड़े पैमाने पर गोहत्या जारी है। इतना ही नहीं गाय के मांस को गुपचुप तरीके से बेचने का काम भी यहां धड़ल्ले से बिना रोक-टोक किया जा रहा है। यहां कुछ अधिकारी और नेता मिलकर निजी हितों की पूर्ति के लिए समझौता कर गोवध के मामलों को दबाकर इसमें संलिप्त लोगों को बचाने का काम कर रहे हैं। पुलिस एवं नेताओं की इस कार्यप्रणाली से जहां एक तरफ गो भक्त एवं हिन्दू संगठन बड़े चिंतित हैं, वहीं दूसरी ओर उनमें भारी रोष भी पनप रहा है।

हिन्दू संगठनों एवं गोभक्तों का गोवंश तस्करों और गोहत्या करने वालों के साथ सीधा टकराव भी हो रहा है। गोकशी करने वाले इतने हठी हैं कि उन पर दारूल उलूम देवबंद के फतवों और उत्तराखंड के राज्यपाल अजीज कुरैशी की मुहिम का भी कोई असर नहीं हो रहा है। ध्यान रहे, दारूल उलूम, देवबंद हर वर्ष ईद उल जुहा के मौके पर मुसलमानों से गाय की कुर्बानी न करने की लिखित में अपील जारी करता है। दारूल उलूम ने अनेक बार मुसलमानों से अपील भी की है कि वे गाय के प्रति हिन्दू भावनाओं का सम्मान करते हुए गोवध के खिलाफ बने कानून का पालन करने की खातिर किसी भी कीमत पर गोहत्या न करें। गांधीवादी अजीज कुरैशी ने उत्तराखंड का राज्यपाल बनने के बाद प्रदेश में अपने समुदाय द्वारा की जाने वाली गोकशी की घटनाओं पर संज्ञान लिया और इस पूरे इलाके में इस धंधे में जुटे प्रभावशाली लोगों की बैठक बुलाकर अपील की थी कि वे गोकशी से बाज आएं और हिन्दुओं के लिए पूजनीय गो-माता का सम्मान करें। लेकिन राज्यपाल की इस मुहिम का भी आज तक किसी पर कोई असर नहीं हुआ।

गायों के रोजाना हो रहे वध से चिंतित देवबंद के मोहल्ला कानून गोयान निवासी पर्यावरणविद् एवं गो-गंगा प्रेमी शशांक जैन कहते है। कि हिन्दू धर्म ही नहीं, बल्कि दूसरे सभी पंथों के लोगों द्वारा भी गाय को पाला जाना बेहद जरूरी है क्योंकि गाय से मिलने वाली हर वस्तु सिर्फ एक जाति या संप्रदाय के लिए ही नहीं बल्कि पूरी मनुष्य जाति के लिए बहुत ही महत्त्वपूर्ण है। शशांक कहते हैं कि कोई भी पंथ गाय का वध करने की अनुमति नहीं देता है और हिन्दू धर्म में तो गाय की पूजा की जाती है क्योंकि गाय में करोड़ों देवी-देवताओं का वास माना गया है। वह कहते हैं कि यदि गोवंश का आए दिन इसी तरह वध होता रहा तो एक दिन आयेगा जब गाय का अस्तित्व ही समाप्त हो जायेगा और उससे प्राप्त दूध, दही एवं घी को भी लोग पूरी तरह से तरस जायेंगे, फिर भी न जाने क्यों भारत सरकार गोहत्या को रोकने के लिए कोई कठोर कानून क्यों नहीं बनाती।

मुजफ्फरनगर के शाहपुर, बसीकला, कसेरवा, हरसौली, तावली, निरवानी, बसदाडा, कैराना एवं कांधला आदि ऐसे इलाके हैं, जहां सबसे ज्यादा गोकशी होती है। सहारनपुर में बेहट, देवबंद और सरसावा में प्रतिदिन गोहत्याएं होती हैं। सहारनपुर जिला गो तस्करी का गढ़ बन चुका है। यहां आए दिन गोवंश एवं गो मांस से भरे वाहन हिन्दू संगठनों द्वारा पकड़े जाते हैं। पुलिस मामले तो दर्ज करती है, लेकिन सफेदपोश नेताओं के दबाव में वह गो तस्करों और गोकशों को जेल नहीं भेजती है। इससे इस अवैध कृत्य पर अंकुश नहीं लग पा रहा है। इस स्थिति से विधानसभा चुनाव में सपा को सर्वसमाज का जो वोट मिला था लोकसभा चुनाव में वह नहीं मिला। सबसे ज्यादा खामियाजा सपा को भुगतना पड़ा।

गाय की सेवा मात्र से सांस की परेशानी तक दूर हो जाती है साथ ही गो-उत्पादों से बीमारियों के उपचार के लिए दवाइयां भी तैयार की जाती हैं।

उत्तर प्रदेश में लागू गोवध निवारक अधिनियम के अंतर्गत न केवल सभी प्रकार के गोवंश की हत्या पर प्रतिबंध है, बल्कि गोवंश को राज्य में एक स्थान से दूसरे स्थान पर ले जाने या बाहर ले जाने पर भी प्रशासनिक पाबंदी है। इसके बावजूद प्रदेश भर में गोवंश की तस्करी और अंधाधुंध हत्या जारी है।

आजादी के समय भारत में 18 करोड़ से ज्यादा गोवंश था जिसमें से 40 प्रतिशत अकेले उत्तर प्रदेश में था। वर्ष 1993 की पशु गणना के अनुसार गाय-बैल-बिजार-बछड़े-बछिया आठ करोड़ 90 लाख थे, जो वर्ष 2003 में घटकर आठ करोड़ 30 लाख रह गए। बढ़ते मांस निर्यात के कारण 2003 से गोवध और गोवंश की तस्करी विकराल हो चुकी है।

आयुर्वेद में स्पष्ट लिखा है कि गाय का दूध, घी और दही स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है। इसका सेवन करने से बीमारी नहीं रहती है।

देश में गोवंश की 26 प्रमुख नस्लों में से 16 बिल्कुल खत्म हो चुकी है। सरकार ने 2007 की 18वीं पशु गणना के आंकड़े इस डर से जारी नहीं किए हैं कि वास्तविकता जान कहीं जनता भड़क न उठे। गोकशी में सहारनपुर मंडल शीर्ष पर है, जहां 24 वर्षों के दौरान गायों की संख्या चार लाख घट गई। 1988 में सहारनपुर मंडल में सात लाख 97 हजार 877 गोवंश था। जो 2012 में घटकर तीन लाख 97 हजार 301 रह गया। मुरादाबाद मंडल में 1988 में 10 लाख 76 हजार गोवंश था। 2012 में यह सात लाख 54 हजार 595 रह गया। मेरठ मंडल में 1988 में 6 लाख 70 हजार 608 गोवंश था जो अब घटकर पांच लाख 60 हजार 909 रह गया।

गो उत्पाद रोगों से लड़ने में उपयोगी

देवबंद के मोहल्ला छिप्पीवाड़ा निवासी व आयुर्वेद की किताबों के विशेष जानकार एवं गो-गंगा प्रेमी गौरव सिंघल कहते हैं कि आयुर्वेद की पुरानी किताबों में साफ लिखा है कि गाय का दूध पौष्टिक तथा घी और दही स्वास्थ्य के लिए लाभकारी होता है और उसके सेवन करने से किसी प्रकार की कोई बीमारी नहीं रहती है। सिंघल कहते हैं कि किताबों में यहां तक लिखा है कि गाय के मांस से टीबी जैसी भयंकर बीमारी जन्म ले लेती है, जो कि मनुष्य के लिए बड़ी घातक है।

शशांक जैन, पर्यावरणविद

गौरव सिंघल, गो सेवक

सिंघल कहते हैं कि गो मूत्र के अर्क के सेवन से बाय एवं गठिया रोग तक पूरी तरह से दूर हो जाता है और गाय की सेवा मात्र से सांस की परेशानी दूर हो जाती है। वहीं श्री कृष्ण गोशाला, देवबंद में तो गाय के गोबर से केंचुए पालन करके खेती के लिए अति उपयोगी जैविक खाद तैयार की जा रही है और गोमूत्र से गंभीर बीमारियों के उपचार की दवा बनाई जा रही है।

देवबंद गोशाला में इस समय 200 से ज्यादा गाय और उनके बछड़े आदि हैं। यहां केंचुओं के पालन और उनके जरिए बनने वाली जैविक खाद से होने वाली आय गायों के पालन पर ही खर्च होती है। इसकी खाद बहुत कम समय में बनकर तैयार हो जाती है। जांच से यह भी पता चला है कि केंचुए द्वारा तैयार जैविक खाद बीमारी फैलाने वाले सूक्ष्म जीवों से रहित होती है।

गोशाला में दो क्विंटल केंचुए हैं। एक क्विंटल केंचुए 24 घंटे में एक क्विंटल गोबर खायेंगे तो उससे 50 किलो खाद बनेगी, जो सूखकर 25 किलो रह जायेगी, गोशाला पांच रुपये किलो की दर से किसानों को जैविक खाद बेचती है।

- पांचजन्य से साभार

- **बढ़ती गोकशी के कारण गायों की 70 में से 33 प्रजातियाँ ही शेष बची हैं। कुछ तो बिल्कुल लुप्त होने के कगार पर हैं।**
- **स्वतंत्रता के बाद गायों की संख्या में 80 प्रतिशत की गिरावट आई है।**
- **स्वतंत्रता के समय देश में 300 से अधिक कतलखाने थे। आज 35000 अधिकृत और लाखों अनधिकृत कतलखाने हैं।**
- **भारत प्रमुख गोमांस निर्यातक देशों में से एक बन गया है।**
- **मांस निर्यातक लाइसेंस तो अन्य पशुओं को काटने का लेते हैं। लेकिन लाइसेंस मिलने के बाद उन कतलखानों में गायों को काटा जाता है।**
- **कुल मांस निर्यात में उत्तर प्रदेश का हिस्सा 40 प्रतिशत के साथ देश में सर्वाधिक है।**

hearyasamaj.org

सिविल सेवा में अंग्रेजी का वर्चस्व

–डॉ. विजय अग्रवाल

हाल ही में घोषित सिविल सेवा परीक्षा का सबसे चौंकाने वाला भाषायी पहलू यह है कि शुरू के सफल 25 प्रतियोगियों में 24 अंग्रेजी माध्यम से हैं और सौभाग्य से एक स्थान कन्नड़ को मिल गया है। हिंदी और अन्य सभी भारतीय भाषाओं का देश की सर्वोच्च सेवा से इस तरह से क्रमशः निष्कासन का दौर वर्ष 2011 से उस समय से शुरू हुआ, जब प्रारंभिक परीक्षा के दूसरे पेपर के रूप में वैकल्पिक विषय के स्थान पर सीसेट को लाया गया। हालांकि पेपर हिंदी और अंग्रेजी भाषाओं में पहले की ही तरह आते हैं और विभिन्न भारतीय भाषाओं को परीक्षा के माध्यम के रूप में भी ज्यों का त्यों ही रखने की तथाकथित भाषायी उदारता दिखाई गई है, लेकिन सीसेट में बड़ी कुटिलता और चालाकी के साथ अंग्रेजी की प्रभुसत्ता थोप कर प्रारंभिक स्तर पर ही भारतीय भाषाओं के प्रतियोगियों को रोकने का अत्यंत घृणित, अलोकतांत्रिक और यहां तक कि असंवैधानिक प्रावधान भी कर दिया गया है। इसका नतीजा यह हुआ है कि इससे पहले जहां सिविल सेवा परीक्षा में हिंदी और सभी भारतीय भाषाओं से सफल होने वाले प्रतियोगियों का प्रतिशत 40 के करीब होता था, यह गिरकर 8–9 के करीब रह गया। संघ लोक सेवा आयोग से यह प्रश्न किया जाना चाहिए कि उसने पिछले 2–3 सालों से अपनी वार्षिक रिपोर्ट से भाषावार चयनित उम्मीदवारों की जानकारी को गायब क्यों कर दिया।

सीसेट के सात बिंदुओं में एक बिंदु बोधगम्यता का है तथा दूसरा अंग्रेजी बोधगम्यता का। बोधगम्यता तो ठीक है, लेकिन सवाल है कि अंग्रेजी बोधगम्यता क्यों?और वह भी तब, जबकि मुख्य परीक्षा में सामान्य अंग्रेजी का तीन सौ अंकों का पूरा एक पेपर ही है, जिसे क्वॉलीफाई करना अनिवार्य है। इस 'अंग्रेजी बोधगम्यता' का एक और भी गजब का पेंच है। कहा गया है कि इसका स्तर दसवीं कक्षा का होगा। अब पहला सवाल तो यह है कि इस दसवीं के स्तर का निर्धारण कैसे हो?जिसे थोड़ी बहुत अंग्रेजी आती है, वह इसे आसानी से हल नहीं कर सकता और उसे 200 अंकों के इस पेपर के अंग्रेजी वाले लगभग 22 अंकों में शून्य ही मिलेगा। जबकि दसवीं का स्तर होने के कारण अंग्रेजी माध्यम वाला कोई भी स्नातक प्रतियोगी इसके 22 में 22 नंबर ले आता है। यह कल्पना मात्र नहीं है, सच है। यही हो रहा है। जहां एक–एक नंबर के अंतर में 5–5 सौ रैंक का फर्क पड़ जाता है, वहां 22 नंबरों के पक्षपात के करिश्मे को समझना तनिक भी मुश्किल नहीं है। इसलिए गैर अंग्रेजीभाषी इसी स्तर पर रोक दिए गए हैं। 'अंग्रेजी बोधगम्यता' का यह प्रावधान प्रकारांतर से अंग्रेजी वालों को उपलब्ध कराया गया 'भाषायी आरक्षण' ही है। भाषा का यह मायाजाल यहीं खत्म नहीं हो जाता, बल्कि 'बोधगम्यता' वाले अंश भी बुरी तरह से इसकी गिरफ्त में हैं और दुर्भाग्य की बात यह है कि 200 अंकों में से इससे संबंधित प्रश्नों का वजन 60 से 80 अंकों तक का है। यदि इसमें अंग्रेजी के बोधगम्यता को भी शामिल कर दिया जाए तो सीसेट का आधा पेपर इस 'तथाकथित बोधगम्यता' पर निर्भर बना दिया गया है, जो मूलतः भाषा की समझ पर आधारित अधिक है, तथ्यों पर कम। इसके अंतर्गत लगभग साढ़े तीन सौ शब्दों वाला एक परिच्छेद दिया जाता है, जिसे पढ़ने और समझने के बाद इसी अनुच्छेद पर आधारित दो प्रश्नों केचार विकल्पों में से सही उत्तर चुनने होते हैं। नमूने के तौर पर पिछले साल के एक परिच्छेद की यह हिंदी देखें, 'अंतरराष्ट्रीय वित्तीय बाजारों में दुर्बल विश्व आर्थिक प्रत्याशाओं और अनवरत विद्यमान अनिश्चितताओं ने उभरती बाजार अर्थव्यवस्थाओं पर स्पष्ट प्रभाव डाला है। सार्वभौम जोखिम से जुड़े सरोकारों ने विशेषकर यूरो क्षेत्र में, ग्रीस की घोर ऋ ण समस्या की संक्रामकता से प्रभावित होकर, जो अस्थिरता के सामान्य से अधिक ऊंचे स्तर के रूप में भारत और अन्य अर्थव्यवस्थाओं में फैल रही है, पूरे वर्ष के बृहत्तर हिस्से में वित्तीय बाजारों को प्रभावित किया है।' क्या यह हिंदी इसके अच्छे–खासे जानकारों तक के पल्ले पड़ेगी, वह भी बहुत कम समय में, जहां वक्त विद्यार्थी को दोबारा पढ़ने की इजाजत नहीं देता है। सिविल सेवा में परीक्षा का माध्यम संविधान में उल्लिखित कोई भी भाषा है, लेकिन पेपर केवल हिंदी और अंग्रेजी में ही आते हैं। इस स्थिति में क्या इस हिंदी को उड़िया या तेलुगू माध्यम से सरकारी स्कूल में पढ़ा हुआ बाइस साल का वह विद्यार्थी समझ सकेगा, जिसे नहीं के बराबर अंग्रेजी आती है?बेहद अपमानजनक तो यह भी लगता है कि क्या हिंदी भाषा में ऐसा कुछ लिखा ही नहीं जाता है, जिसके मूल को परिच्छेद के रूप में दिया जा सके?

थोड़े से जो परीक्षार्थी इस प्रारंभिक परीक्षा से निकलकर मुख्य परीक्षा में पहुंचने में सफल हो जाते हैं, उनकी चेतना को फिर से अनूदित हिंदी के कोड़ों की मार झेलनी पड़ती है। इस लिहाज से वर्ष 2013 की मुख्य परीक्षा में लोक प्रशासन विषय में पूछे गए एक प्रश्न की इस हिंदी का अर्थ जानने का प्रयत्न करते हैं, 'संगठनात्मक प्रबंधन और प्रतिकार के माध्यम से और कर्मचारियों द्वारा ऊपरिमुखी प्रभाव प्रयास के माध्यम से अनुसरण किए जा रहे मनोवैज्ञानिक संविदा की क्या प्रकृति होती है।' यहां मैंने यूपीएससी द्वारा भाषा के आधार पर गैरअंग्रेजीभाषियों से किए जाने वाले अप्रत्यक्ष छल की एक बानगी प्रस्तुत की है। यह प्रश्न अलग है कि क्या सचमुच में भारत का प्रशासन चलाने के लिए अंग्रेजी का ज्ञान अनिवार्य है?कुल मिलाकर यह कि सिविल सेवा परीक्षा के इस भाषायी मुद्दे पर पूरी संवेदनशीलता के साथ विचार किए जाने की जरूरत है। यह सवाल केवल प्रशासन के चरित्र तथा भारतीय भाषाओं की गरिमा से ही नहीं, बल्कि देश की अस्मिता से भी जुड़ा हुआ है, जिसे हम 'भारत' कहते हैं।

(लेखक पूर्व प्रशासनिक अधिकारी हैं)

– दैनिक जागरण से साभार

नासूर बन रहा है नशा

– राजेश कश्यप

नशा पूरे समाज के लिए नासूर बन चुका है। बीड़ी, सिगरेट, शराब से लेकर सुलफा, भांग, चरस, गांजा, अफीम, ब्राउन शुगर, हेरोइन, स्मैक, भुक्की तक नाना तरह के नशे सामान्य बात हो गई हैं। सामान्य धूम्रपान से लेकर स्वापक एवं मादक पदार्थों का सेवन लाखों–करोड़ों जिंदगियों को तबाह कर रहा है। विडंबना का विषय है कि अब तो सामान्य दवाओं का भी नशे के रूप में सेवन किया जाने लगा है। आज कोई भी घर ऐसा नहीं है, जो नशे से अछूता हो। कोई व्यक्ति भले ही नशे से अछूता मिल जाये लेकिन घर नहीं मिलेगा। अपवाद के तौर पर ही संभवतः नशे से अछूता कोई परिवार मिलेगा। इससे सहज अनुमान लगाया जा सकता है कि नशे के मकड़जाल में समाज किस कदर फंस चुका है।

सबसे बड़ी विडंबना का विषय तो यह है कि इन घातक और खौफनाक नशे का शिकार बड़ी संख्या में देश के नौजवान हो चुके हैं। युवाओं को नशे की दलदल में तेजी के साथ धंसना, इस समय देश के समक्ष सबसे विकट चुनौती बन चुकी है। गत वर्ष पंजाब के मुख्यमंत्री प्रकाश सिंह बादल ने सार्वजनिक मंच से अफगानिस्तान के राष्ट्रपति को सांकेतिक अनुरोध करते हुए कहा था कि आप अपनी हेरोइन को रोकिए, हमारे नौजवान तबाह हो रहे हैं।

एसोचैम ने वर्ष 2009 में 2000 किशोरों का अध्ययन किया था, जिसमें यह बात सामने आई थी कि पिछले पांच सालों के दौरान 19 से 26 वर्ष के किशोरों के बीच में शराब का उपभोग 60 फीसदी बढ़ा है। महानगरों में रहने वाले किशोरों में 45 फीसदी से ज्यादा महीने में पांच से छह बार पीते हैं। जबकि 70 फीसदी सामाजिक मौकों पर पीते हैं। नवंबर, 2011 में एसोचैम ने अपने एक अन्य सर्वेक्षण में पाया कि पिछले दस साल के दौरान 15 से 18 वर्ष के युवाओं के बीच पीने की आदत में 100 फीसदी का इजाफा हुआ है। स्वास्थ्य से सम्बन्धित विभिन्न राष्ट्रीय एवं अंतरराष्ट्रीय संस्थाओं की रिपोर्टों के अनुसार शराब का इस्तेमाल करने की उम्र में निरंतर कमी दर्ज की गई है। जहां वर्ष 1980 में 28 वर्ष की औसत उम्र में शराब पीनी शुरू की जाती थी, वहीं यह वर्ष 1997 में 19 वर्ष और वर्ष 2012 में मात्र 13 वर्ष की उम्र दर्ज की गई है। सर्वेक्षणों के अनुसार 46 प्रतिशत लोग 'टुल' होने के लिए, 32 प्रतिशत 'परेशानियों' के कारण, 18 प्रतिशत 'अकेले' और 15 प्रतिशत बोर होकर पीते हैं। दिल्ली एनसीआर, मुम्बई, चंडीगढ़, हैदराबाद आदि महानगरों के 70 प्रतिशत युवाओं ने सर्वे में यह माना कि वे सामाजिक मौकों, परीक्षाओं से पहले और बाद में सुकून के लिए या रात के समय एल्कोहल का सेवन करते हैं।

मुम्बई के हीरानंदानी अस्पताल के मनोवैज्ञानिक डॉ. हरीश शेट्टी का कहना है कि खाने की मेज पर शराब का परोसना अब सामान्य बात हो चुकी है। पिता को मेहमानों को शराब परोसते देखते हैं और माताएं किटी पार्टियों में मजे से शराब पीती हैं तो भला बच्चों पर उसका असर कैसे नहीं होगा?दिल्ली के मैक्स हेल्थकेयर में चीफ साइकिएट्रिस्ट डॉ. समीर पारिख और उनकी टीम ने कुछ वर्ष पूर्व दिल्ली के दो बड़े स्कूलों के 100 छात्रों के बीच एक सर्वेक्षण किया तो बड़े चौकाने वाले परिणाम सामने आए। इनमें से 22 फीसदी बच्चों का मानना था कि पार्टी में एक पैग तो सभी लेते हैं, जबकि 26 फीसदी का मानना था कि 'कूल' होने का मतलब है तीन से चार पैग। डॉ. पारिख का कहते हैं कि 13 से 17 वर्ष की उम्र में शराब पीना एक सामान्य सी बात बनती चली जा रही है।

आज नशे का मूल कारक खुशी नहीं, बल्कि 'गम', 'परेशानी', 'तनाव', 'अवसाद', 'हार', 'हीनता', 'अति महत्वाकांक्षा', 'उदासी', 'नीरसता' आदि बन गए हैं। ऐसे में मनोवैज्ञानिकों की भूमिका सबसे महत्त्वपूर्ण हो चली है। नशा न तो कोरे उपदेश देने से छुड़ाया जा सकता है, न धमकाकर छुड़ाया जा सकता है, न मारपीट करके छुड़ाया जा सकता है। नशा चाहे कोई भी हो, वह एक सौहार्दपूर्ण माहौल में भावनात्मक और सकारात्मक बातचीत के जरिये मनोवैज्ञानिक रूप से छुड़ाया जा सकता है।

संतोषजनक बात यह है कि जितने भी नशे के शिकार व्यक्ति हैं उनमें से अधिकतर इसे 'लत' मानने लगे हैं और वे इससे छुटकारा पाने की चाह भी रखते हैं। नशे को 'लत' या 'बीमारी' मान लेना सबसे बड़ी बात है। इससे समस्या से छुटकारा पाना बेहद आसान हो जाता है।

– हरिभूमि से साभार

thearyasamaj.org

साई बाबा का विरोध कितना सही कितना गलत

– डॉ विवेक आर्य

साईं बाबा के नाम को सुर्खियों में लाने का श्रेय शंकराचार्य स्वामी स्वरूपानंद जी को जाता हैं जिनका कहना हैं की साई बाबा की पूजा हिन्दू समाज को नहीं करनी चाहिए क्यूंकि न साई ईश्वर के अवतार हैं न ही साई का हिन्दू धर्म से कुछ लेना देना हैं। साई बाबा जन्म से मुस्लमान थे और मस्जिद में रहते थे एवं सबका मालिक एक हैं कहते थे। शंकराचार्य जी को कहना हैं की ओम साई राम में राम के नाम साई के नाम के साथ जोष्ना गलत हैं और जो राम का नाम लेते हैं वे साई का नाम कदापि न ले, यह हिन्दू धर्म की मान्यताओं के विरुद्ध हैं। कुछ लोग शंकराचार्य जी की दलीलों को सही ठहरा रहे हैं क्यूंकि साई बाबा के नाम के साथ मुस्लमान शब्द का जुड़ा होना उनके लिए असहनीय हैं जबकि कुछ लोग जो अपने आपको साई बाबा का भगत बताते हैं शंकराचार्य जी के विरोध में उनके पुतले फूंक रहे हैं।

हमें यह जानना आवश्यक हैं की साई बाबा का पिछले एक दशक में इतने अधिक प्रचलित होने के पीछे क्या कारण हैं?क्या कारण हैं की एकाएक हिन्दू मंदिरों में साई बाबा की मूर्ति सबसे बड़ी होने लगी और बाकि हिन्दू देवी देवता उसके समक्ष बौने दिखने लगे हैं?क्या कारण हैं की प्रायः हर हिन्दू के घर में रामायण, गीता, भागवत आदि के स्थान पर साई आरती के गुटके पड़े जाते हैं?क्या कारण हैं की राम और कृष्ण के नामों से अपने बच्चों का नामकरण करने वाले हिन्दू लोग साई के नाम से अपने बच्चों को पुकारने में गर्व करने लगे हैं?उत्तर स्पष्ट हैं की सामान्य जन साई बाबा द्वारा चमत्कार करने, बिगड़े कार्य बनाने, अधूरे काम बनाने, व्यापार, नौकरी, संतान प्राप्ति, प्रेम सम्बन्ध आदि कार्यों में सफलता प्राप्ति करने हेतु करते हैं। अगर विस्तृत रूप से देखा जाये तो हिन्दू समाज में जितनी भी पूजा–उपासना की विधियाँ प्रचलित हैं उनका लक्ष्य ईश्वर प्राप्ति नहीं अपितु जीवन में सफलता प्राप्ति अधिक हैं। जैसे कोई तीर्थों में ,कोई पहाड़ों में,कोई नदियों में, कोई जीवित गुरुओं के चरणों में या गुरु नाम में , कोई मृत गुरुओं के चित्र और वस्तुओं में, कोई पीरों में, कोई कब्रों में, कोई निर्मल बाबा के गोलगप्पों में, कोई व्रत कथाओं में, कोई हवनों में, कोई पुराणों के महात्म्य में, कोई निरीह पशुओं की बलि में, कोई आडम्बरों में, कोई गंडा–तावीज में सफलता की खोज कर रहा हैं। वैसे हिन्दुओं के समान मुस्लिम समाज भी मक्का मदीना से लेकर दरगाहों और कब्रों में तो ईसाई समाज भी प्रार्थना रूपी पूजा, ईसाई संतों के चमत्कारों में सफलता खोज रहा हैं।

सत्य यह हैं की हिन्दू समाज की ईश्वर के गुण, कर्म, स्वभाव से अनभिज्ञता, चमत्कार को कर्म–फल व्यवस्था से अधिक महता , वेदादि शास्त्रों में वर्णित ईश्वर की पूजा करने सम्बन्धी अज्ञानता इस अव्यवस्था के लिए मुख्य रूप से दोषी हैं। खेद हैं की शंकराचार्य जी भी इस समस्या का समाधान करने में विफल हैं क्यूंकि उनके अनुसार साई के स्थान पर गंगा स्नान और राम नाम के स्मरण से ईश्वर की पूजा करनी चाहिए। जब तक सर्वव्यापक, अजन्मा, सर्वज्ञानी, सर्वशक्तिमान एवं निराकार ईश्वर की सत्ता में पूर्ण विश्वास नहीं होगा तब तक धर्म के नाम पर इसी प्रकार से पाखंड फैलते रहेंगे। जब तक मनुष्य को यह नहीं सिखाया जायेगा की हम ईश्वर की उपासना इसलिए करते हैं ताकी अनादि ईश्वर के सत्यता, न्यायकारिता, निष्पक्षता, दयालुता जैसे गुण हमारे भी हो जाये तब तक मनुष्य इसी प्रकार से सफलता प्राप्ति के लिए विभिन्न प्रकार के अंधविश्वासों में भटकता रहेगा। जब तक मनुष्य को यह नहीं सिखाया जायेगा की जीवन का उद्देश्य आत्मिक उन्नति कर मोक्ष की प्राप्ति हैं तब तक मनुष्य अपने आपको भ्रम में रखकर दुःख भोगता रहेगा।

इसलिए केवल साई बाबा का विरोध इस समस्या का समाधान नहीं हैं अपितु वेद विहित सत्य के प्रचार से ही इस समस्या का समाधान संभव हैं।

वैदिक सार्वदेशिक के सदस्यों से निवेदन

वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका के उन ग्राहकों से विनम्र निवेदन है जिनका वार्षिक शुल्क समाप्त हो चुका है। वे शीघ्र अपना वार्षिक शुल्क 250/- रुपये सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के कार्यालय में भिजवाने की व्यवस्था करें, अन्यथा भविष्य में उन्हें नियमित रूप से पत्रिका भेज पाना सम्भव नहीं हो सकेगा, और उनका नाम ग्राहक सूची से हटा दिया जायेगा। वैदिक सार्वदेशिक का वार्षिक शुल्क 250/- रुपये एवं आजीवन शुल्क 2500/- रुपये है। जो महानुभाव इस पत्रिका को मंगाना चाहें वह उपरोक्त राशि चैक/ड्राफ्ट अथवा धनादेश द्वारा ''सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा'' के नाम से सभा कार्यालय ''महर्षि दयानन्द भवन'' 3/5, आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2 के पते पर भेजें। देश-विदेश में हजारों की संख्या में भेजे जाने वाले वैदिक सार्वदेशिक को प्रति सप्ताह अपने घर पर प्राप्त करने के लिए शीघ्र सम्पर्क करें।

-व्यवस्थापक, वैदिक सार्वदेशिक

सावधान ! सावधान !! सावधान !!!

सेवा में,

समस्त भारतवर्ष की आर्यसमाजों/आर्य संस्थाओं एवम् आर्य भाइयों के लिए आवश्यक सन्देश

विषय : क्या आप 100% शुद्ध हवन सामग्री का प्रयोग करते हैं?

आदरणीय महोदय,

क्या आप प्रातःकाल एवम् सायंकाल अथवा साप्ताहिक यज्ञ अपने घर अथवा अपने आर्यसमाज मन्दिर में करते हैं?यदि ''हाँ'' तो यज्ञ करने से पहले जरा एक दृष्टि ध्यान से, आप जो हवन सामग्री प्रयुक्त करते हैं, उस पर डाल लीजिए। कहीं यह 'घटिया' हवन सामग्री तो नहीं अर्थात् मिलावटी, बिना 'आर्य पर्व पद्धति' से तैयार तो नहीं?इस घटिया हवन सामग्री द्वारा यज्ञ करने से लाभ की बजाय हानि ही होती है।

जब आप घी तो 100% शुद्ध प्रयोग करते हैं, जिसका भाव 250/- से 300/- रुपये प्रति किलो है तो फिर हवन सामग्री भी क्यों नहीं 100% शुद्ध ही प्रयोग करते हैं?क्या आप कभी हवन में डालडा घी डालते हैं?यदि नहीं तो फिर 'अत्यधिक घटिया' हवन सामग्री यज्ञ में डालकर क्यों हवन की भी महिमा को गिरा रहे हैं?

अभी पिछले 26 वर्षों में लगभग भारत की 75% आर्यसमाजों में गया तथा देखा कि लगभग सभी आर्य समाजें व आर्यजन सस्ती से सस्ती हवन सामग्री का प्रयोग कर रहे हैं। कई लोगों ने बताया कि उन्हें मालूम ही नहीं है कि असली हवन सामग्री क्या होती है?तथा हम तो कम से कम भाव पर जहां भी मिलती है वहीं से मंगवा लेते हैं।

यदि आप 100% शुद्ध उच्च स्तर की हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं तो मैं तैयार करवा देता हूँ यह बाजार में बिक रही हवन सामग्री से महंगी तो अवश्य पड़ेगी परन्तु बनेगी भी तो 'देशी' हवन सामग्री अर्थात् जिस प्रकार 100% शुद्ध देसी घी महंगा होता है उसी प्रकार 100% शुद्ध हवन सामग्री भी महंगी पड़ सकती है। आज हम लोग मंहगाई के युग में जो 14 से 35 रुपये प्रति किलो तक की हवन सामग्री खरीद रहे हैं वह निश्चित रूप से मिलावटी है क्योंकि 'आर्य पर्व-पद्धति' अथवा 'संस्कारविधि' में जो वस्तुएँ लिखी है वे तो बाजार में काफी महंगी हैं।

आप लोग समझदार है तो फिर बिल्कुल निम्न कोटि की घटिया हवन सामग्री क्यों प्रयोग करते चले आ रहे हैं?घटिया हवन सामग्री प्रयोग कर आप अपना धन और समय तो खो ही रहे हैं साथ ही साथ यज्ञ की महिमा को भी गिरा रहे हैं और मन ही मन प्रसन्न हो रहे है कि आ हा ! यज्ञ कर लिया है।

भाइयों और बहनों! और पूरे भारतवर्ष की आर्यसमाजों के मंत्रियों और मन्त्रिणियो ! अब समय आ चुका है कि हमें जाग जाना चाहिए आप लोगों के जागने पर ही यज्ञ का पूरा लाभ आपको मिल सकेगा।

यदि आप लोग मेरा साथ दें तो मैं आप लोगों को वास्तव में वैदिक रीति के अनुसार ताजा जड़ी-बूटियों से तैयार करवाकर उच्च स्तर की 100% शुद्ध देशी हवन सामग्री जिस भाव भी मुझे पड़ेगी, उसी भाव पर अर्थात् 'बिना लाभ बिना हानि' सदैव भेजता रहूँगा। मुझे आशा ही नहीं बल्कि पूर्ण विश्वास है कि आप लोग मेरा साथ देंगे तथा यज्ञ की गरिमा को बनाए रखेंगे।

धन्यवाद सहित,

नोट : 1. हमारे यहां लोहे, तांबे एवं टीन की नई चादर से विधि अनुसार बने हुए सुन्दर व मजबूत विभिन्न साइजों के हवन-कुण्ड (स्टैण्ड सहित), सर्वश्रेष्ठ गुग्गुल, शुद्ध असली देशी कपूर, असली सफेद/लाल चन्दन पाउडर, असली चन्दन समिधा एवं तांबे के यज्ञपात्र भी उपलब्ध हैं।

2. सभी आर्य सज्जनों से निवेदन है कि वे लगभग जिस भाव की भी हवन सामग्री प्रयोग करना चाहते हैं वह भाव हमें लिखकर भेज दें। हमारे लिए यदि सम्भव हुआ तो उनके लिखे भाव अनुसार ही हम बिल्कुल ताजा व बढ़िया से बढ़िया हवन सामग्री बनाकर भेजने का प्रयास कर देंगे। आदेश के साथ आधा धन अग्रिम मनीआर्डर से भेजें।

भवदीय

देवेन्द्र कुमार आर्य

विदेशों एवं समस्त भारतवर्ष में ख्याति प्राप्त

(सुप्रसिद्ध हवन सामग्री विशेषज्ञ)

हवन सामग्री भण्डार

631/39, औंकार नगर-सी, त्रिनगर, दिल्ली-110035 (भारत)

मों. : 9958279666, 9958220342

thearyasamaj.org

पंजीयन संख्या DELMUL/2005/15488
डाक पंजीकरण संख्या DL(c)-01/1213/12-14
Licence to Post without prepayment of Postage. [U (c)-289/2012-14]

मोगा (पंजाब) के ईंट भट्टे से रिहा कराये 25 दलित बंधुआ मजदूर

सौ में सत्तर आदमी फिलहाल जब नाशाद है, दिल पे रखकर हाथ कहिये देश क्या आज़ाद है ?इन पंक्तियों के माध्यम आज की देश की व्यवस्थाओं पर सीधा व्यंग्यात्मक प्रहार किया गया है। आज़ादी के 67 वर्ष बाद भी देश का दलित और आदिवासी तबका आज भी गुलामी के अंधेरे में शोषण और अत्याचार को भोगने पर मजबूर है। समाज कंटक खुले आम मानव तस्करी का व्यापार कर रहे है और तो और दलित और आदिवासियों को बंधुआ मजदूरी की आग में झोंकने से तनिक भी नही कतरा रहे है। आज आज़ादी उन बंधुआ मजदूरों से कोसो दूरी पर खड़ी है जो ईंट भट्टों पर नारकीय जीवन जी रहे है। बंधुआ मुक्ति मोर्चा ऐसे बंधुआ मजदूरों को गुलामी की बेड़ियों से मुक्त कराकर स्वतन्त्रता से जीने की राह प्रदान कर के इस मुल्क में संघर्ष का रथ दौड़ा रहा है।

यह कोई फिल्मी या मनगढ़न्त कहानी नही है बल्कि एक सच्ची घटना है जिसको बंधुआ मुक्ति मोर्चा ने प्रकाश में लाकर पंजाब सरकार के विकास के दावे पर कड़ा तमाचा मारा है। 25 दलित मजदूरों को बंधुआ मजदूरी से मुक्ति दिलाकर उन्हें आज़ादी की खुली हवा में सांस लेने हेतू नया जीवन प्रदान किया है।

वर्ष 2013 में उत्तर प्रदेश के सहारनपुर निवासी श्री धर्मेन्द्र कुमार ने जिला सहारनपुर एवं गांव मोहम्मदपुर, रूड़की, हरिद्वार (उत्तरांचल) के भोले–भाले दलित ईंट भट्टा मजदूर परिवारों को काम का मोटा दाम और अन्य सुख सुविधाओं का झूठा लालच दिया और अपने चुंगल में फंसाकर मानव तस्करी रूपी काल का थाल बना डाला। लगभग 3–4 परिवार के 25 दलित ईंट भट्टा मजदूरों को एक ट्रक में लादकर सीधा पंजाब के मोगा जिले के बघापुराना तहसील के गांव आलमवाला में संचालित ब्रार ग्राम उद्योग समिति–एस0 एम0 ईंट भट्टें के मालिक श्री सुरेन्द्र कुमार से मौटी रकम पर सौदा करके बैच दिया। सौदे की रकम को ब्याज सहित वसूलने और मौटा मुनाफा कमाने के चक्कर में मालिक सुरेन्द्र कुमार ने मजदूरों से बेगार करवाया और बदले में मजदूरी के बदले कई यातनाएं तक दे डाली।

बंधुआ मुक्ति मोर्चा ने अपने विशेष सूत्रों से इस ममाले का पता लगाकर मोगा जिले के जिलाधिकारी श्री परमिन्दर सिंह गिल को शिकायत पत्र भेजा। जिलाधिकारी ने उप खण्ड अधिकारी बघापुराना को इस मामले में आदेश जारी किये। उप खण्ड अधिकारी ने नायब तहसीलदार, डी0एस0पी0, सहायक श्रम आयुक्त की टीम गठित की । गठित टीम ने बंधुआ मुक्ति मोर्चा के कार्यवाहक निदेशक श्री निर्मल गोराना के साथ मिलकर ब्रार ग्राम उद्योग समिति–एस0 एम0 ईंट भट्टें पर छापा मारा। छापे के दोरान बेगार से जूझते बंधुआ मजदूरों ने अपने दर्द का बयान किया। मालिक सुरेन्द्र कुमार ईंट भट्टा छोड़ कर फरार हो गया। मुक्ति के समय अंत में उप खंड अधिकारी निधि कल्होत्रा मौके पर पहुची और निर्मल गोराना को कोसने लगी कि वो मुक्ति प्रमाण पत्र के बिना मजदूरों को ईंट भट्टे से ले जाये। अंत में उप खंड अधिकारी निधि कल्होत्रा को मुक्ति प्रमाण पत्र जारी करने ही पड़े और फिर मजदूरों को बिना इंटरिफ रिलिफ राशि दिये रात्रि 11 बजे निर्मल गोराना के साथ रवाना कर दिया। बघापुराना प्रशासन ने अपनी मूर्खता का परिचय उस समय दिया जब सभी मुक्त बंधुआ मजदूरों को माल ढोने वाले ट्रक में चढ़ाकर दिल्ली भेजा जा रहा था। जब दिल्ली में ट्रक के प्रवेश की समस्या आई तो ट्रक को हरिद्वार ले जाया गया जहां सीटी मजिस्ट्रेट परिसर में ही सामाजिक कार्यकर्ता डॉ0 नवनीत भाई की मदद से प्रेसवार्ता का आयोजन किया गया। प्रेसवार्ता के माध्यम से हरिद्वार में हुई मानव तस्करी के माामले को प्रकाश में लाया गया और हरिद्वार के जिलाधिकारी से मुक्त बंधुआ मजदूरों के पुनर्वास की गुहार लगाइ गई। दिनांक 22 जून, 2014 को ईंट भट्टा मालिक की ओर से सभी मजदूरों को लगभग एक लाख रू0 की मजदूरी का भुगतान करवाया गया और संगठन ने मुक्त कराये गए बंधुआ मजदूरों को इंटरिफ रिलिफ राशि दिलाने हेतू राष्ट्रीय मानवाधिकार आयोग में शिकायत की।

निर्मल गोराना –कार्यवाहक
निदेशक बंधुआ मुक्ति मोर्चा

प्रतिष्ठा में :–

अवितरण की दशा में लौटाएँ –
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–110002

पाठकों के पत्र तथा प्रतिक्रिया

वैदिक सार्वदेशिक का 5 से 11 जून का अंक मेरे सामने है। मैं बड़ी आतुरता से वैदिक सार्वदेशिक पत्रिका का इन्तजार करता हूँ। यह पत्रिका मैं और मेरा परिवार बड़े ही चाव से पढ़ता है। इसका बहुरंगी स्वरूप तथा प्रकाशित लेख हृदय को झकझोर देने वाले होते हैं श्री लाल्टू जी का लिखा "विश्व नागरिक चेतना की जरूरत" उच्च कोटि का है उन्होंने इस लेख में इन्सान की हैसियत क्या है इस पर प्रकाश डाला है लेकिन फिर भी आज का मानव देश, धर्म, जाति के आधार पर निरन्तर नफरत फैलाने का काम करता है। आखिर इन्सान को कब अकल आयेगी।

– रमेश श्रीवास्तव, कटरा, शाहजहापुर, उत्तर प्रदेश

मैं सार्वदेशिक पत्रिका का आजीवन सदस्य हूँ और पिछले 20 वर्षों से इसे पढ़ता आ रहा हूँ, लेकिन पिछले कुछ माह से इसके स्वरूप में जो परिवर्तन आया है वह वास्तव में सराहनीय है। इसमें प्रकाशित लेख समाज के प्रत्येक वर्ग को ध्यान में रखकर लिखे जाते हैं तथा गरीब, असहाय लोगों की समस्याओं को प्रमुखता से उठाया जाता है। लेकिन यह अखबार आर्य समाज का है। अत: विशेष रूप से वेदों के प्रचार–प्रसार का विशेष ध्यान रखा जाना चाहिए। धन्यवाद।

– गौरव शर्मा, सतवाड़ा, फरुर्खाबाद, उत्तर प्रदेश

पाठक अपनी प्रतिक्रिया और अपने क्षेत्र से समाचार जरूर भेजें।
सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002
ई-मेल : sarvadeshikarya@gmail.com, sarvadeshik@yahoo.co.in

ईश्वरीय ज्ञान चारों वेदों की ऑडियो डी.वी.डी. मनुष्य मात्र के लिये उपलब्ध

10 या इससे अधिक सैट मंगाने पर 50 प्रतिशत की विशेष छूट का लाभ उठायें

परमात्मा ने अपने ज्ञान को सभी मनुष्यों के कल्याण के लिये श्रुति रूप में दिया, जो कि लम्बे कालान्तर के पश्चात् पुनः ऑडियो डी०वी०डी० (श्रुति) रूप में प्रस्तुत किया गया हैं।

चारों वेदों के बीस हजार चार सौ अठ्ठाईस (20,428) मंत्रों को हिन्दी में अर्थ और उनके भावार्थ सहित 362 घण्टे की 8 डी०वी०डी० में डाला गया है।

मंत्रों के साथ उनके देवता, ऋषि, छन्द एवं स्वर भी दिये गये हैं। सभी मंत्रों का शुद्ध एवं सस्वर पाठ किया गया है तथा साथ ही संगीत भी दिया है। 8 डी०वी०डी० के एक सेट की सहयोग राशि 1000 रू. है। 8 डी०वी०डी० के दस या दस से अधिक सेट मंगाने पर 50 प्रतिशत की छूट के साथ 500 रू. प्रति सेट में दिया जा रहा है। डाक व्यय इसके अतिरिक्त होता है।

हमारा लक्ष्य व्यापार करना न होकर वेदों को भारतीय प्रान्तीय भाषाओं एवं विश्व के देशों की प्रमुख भाषाओं में अनुवादित करके फिर श्रुतिरूप में करोड़ों लोगों तक पहुंचाना है।

अतः इस पुनीत कार्य में अपना सहयोग कीजिये और आज ही अपने लिये और दूसरों तक वेदों का ज्ञान पहुंचाने के लिये अधिक से अधिक सैट मंगाने का निम्न सम्पर्क सूत्रों पर आदेश कीजिये।

साहित्य विभाग

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली–2
फोन: 011–23274771, 23260985

सर्व धर्म संसद
7, जन्तर मन्तर रोड, नई दिल्ली–1
फोन: 011–23367943, 23363221

ईमेल: sarvadeshikarya@gmail.com
विश्वम्आर्यम स्प्रिचुअल डी.वी.डी., प्रा. लि. 302, पंचशील गली नं. 1 गढ़ रोड़ मेरठ (उ. प्र.)
www.vishvamaryam.com info@vishvamaryam.com
Mob. +91-8755280038

घर-घर में सत्यार्थ प्रकाश पहुँचाने का सुनहरा अवसर

सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, नई दिल्ली द्वारा एक बार फिर नये कलेवर में प्रकाशित

महर्षि दयानन्द सरस्वती कृत अमर ग्रन्थ

सत्यार्थप्रकाश

मूल्य : 80 रुपये

आकर्षक एवं सुन्दर बहुरंगी आवरण तथा बढ़िया कागज 23X36 के 16वें साईज में 25 प्रतिशत विशेष छूट पर उपलब्ध है।

प्राप्ति स्थान : सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा
"दयानन्द भवन" 3/5 आसफ अली रोड, नई दिल्ली-2

प्रो० विट्ठलराव आर्य, सभा मंत्री, प्रकाशक व मुद्रक द्वारा सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा, 3/5 महर्षि दयानन्द भवन, (रामलीला मैदान/आसफ अली रोड), नई दिल्ली-110002 के लिए प्रकाशित तथा ज्योति प्रिंटिंग प्रेस, ई-94, सैक्टर-6, नोएडा-201301 से प्रकाशित एवं मुद्रित। (फोन : 011-23274771, 23260985 टेलीफैक्स : 23274216)
सम्पादक : प्रो० विट्ठलराव आर्य (सभा मन्त्री) मो.:0-9849560691, 0-9013251500 ई-मेल : sarvadeshik@yahoo.co.in, sarvadeshikarya@gmail.com वैबसाइट : www.vedicaryasamaj.com

वैदिक सार्वदेशिक साप्ताहिक में छपे लेखों तथा विचारों से सम्पादक या सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा की सैद्धान्तिक मतैक्यता होना अनिवार्य नहीं है।